ईको-फ्रेंडली इमारतें बनाइए और बिजली-पानी बचाइए

संतोष कुमार

नई दिल्ली। आपके सपनों का घर सिर्फ सहूलियत ही नहीं देगा बल्कि बिजली-पानी की किचकिच और टैरिफ से भी छुटकारा दिलाएगा। यही नहीं, इससे आपके आसपास की आबोहवा भी साफ होगी। इसके लिए मकान के निर्माण के समय आपको चंद बातों का ख्याल रखना होगा। सेंटर फार साइंस एंड इनवायरमेंट (सीएसई) की हाल की रिपोर्ट इसी विकल्प की ओर इशारा करती है।

रिपोर्ट तेजी से बढ़ते रियल एस्टेट सेक्टर और घटते भौतिक संसाधनों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। इसमें सामान्य इमारतों में प्रयुक्त हो रहे संसाधनों का आकलन करने के साथ इस पर भी प्रकाश डाला गया है कि ईको-फ्रेंडली इमारतें हमारी जरूरतों के कितने हिस्से की भरपाई कर सकती हैं। आंकड़ा चौंकाने वाला निकला। ऐसी इमारतें ऊर्जा और पानी की बचत करने के साथ कार्बन उत्सर्जन में कमी ला सकती हैं।

इसके बावजूद इस तरफ निवेशकों का ध्यान नहीं जा रहा। करीब 98 फीसदी टाउनशिप में सामान्य मकान बनाए जा रहे हैं। सरकार तो वहां भी ध्यान नहीं दे रही जहां आधिकारिक तौर पर ईको फ्रेंडली घरों पर जोर दिया जा रहा है। मसलन नोएडा, जहां ऐसी इमारतों के निर्माण पर कर छूट जैसी कई सुविधाएं दी जा रही हैं।

सीएसई की साक्षी सी. दासगुप्ता ने बताया कि ईको-फ्रेंडली इमारतें बिजली-पानी की बढ़ती मांग में कटौती के लिहाज से बेहद फायदेमंद हैं। ऊर्जा खपत कम करने के साथ इससे हमारा वातावरण भी शुद्ध होगा। लेकिन आज इस तरफ किसी का ध्यान नहीं जा रहा। इसकी जगह पश्चिमी मॉडल पर बड़ी-बड़ी ग्लास की इमारतें बन रही हैं, जो हमारे पर्यावरण के उपयोगी नहीं।

मकान पर छांव

अमूमन ऐसे मकान उत्तर-दक्षिण दिशा में तैयार होते हैं। इससे मकान की छांव मकान पर ही पड़ती है। खिड़कियां और झरोखे इस तरह लगते हैं कि प्राकृतिक हवा और प्रकाश सुचारू रूप से आता रहे। इनमें वाटर हार्वेस्टिंग तकनीक का प्रयोग होता है। घरों से निकलने वाले पानी के उचित प्रबंधन के साथ पेड़-पौधे लगाए जाते हैं। सोलर वाटर हीटर का प्रयोग होता है। ज्यादातर जगहों पर एलईडी लाइट या सीएफएल लगाई जाती है।

खर्च थोड़ा ज्यादा, लंबे समय का फायदा

शोधकर्ताओं का मानना है कि तकनीक प्रयुक्त होने से सामान्य मकानों की अपेक्षा इसका खर्च औसतन 10 फीसदी ज्यादा आता है। अगले चार वर्षों में बिजली-पानी की मद में खर्च कम होने से इसकी भरपाई हो जाती है। पुराने मकानों पर भी गुंजाइश है। मकान के भीतरी हिस्सों में बदलाव करके 40 फीसदी तक ऊर्जा की बचत की जा सकती है।

2% *मात्र टाउनशिप में बन रही ईको-फ्रेंडली इमारतें*

इस तरह की इमारतें कार्बन उत्सर्जन में कमी ला सकती हैं

ईको-फ्रेंडली इमारत के फायदे

- पर्यावरण अनुकूल होने से 30-70 फीसदी तक ऊर्जा की खपत होगी कम
- पानी की खपत 30 फीसदी होगी कम
- भूजल में नहीं होगी गिरावट, कार्बन उत्सर्जन में कमी आने से आबोहवा भी होगी साफ

इमारतों पर विशेष ध्यान की जरूरत

- इमारतों की संख्या में 2030 तक 70 फीसदी तक होगा इजाफा
- देश की कुल ऊर्जा खर्च का 30 फीसदी, पानी का 20 फीसदी व निर्माण सामग्री का 30 फीसदी व जमीन का 20 फीसदी इमारतों में होता प्रयोग
- इमारतों से निकलता कुल अपशिष्ट उत्पादन का 30 फीसदी, जल प्रदूषण का 20 फीसदी व कार्बन उत्सर्जन का 40 फीसदी

ग्रीन बिल्डिंग का अनुभव

हमने 2006 में राजस्थानी शैली का मकान बनवाया। इससे दोपहर बाद मकान की छांव मकान पर ही पड़ती है। छत पर इंसुलेशन करवाया। इससे मकान पर तापमान के उतार-चढ़ाव का असर कम होता है। बड़ी-बड़ी खिड़कियां इस तरह लगवाईं कि धूप की जगह प्रकाश अंदर आए। पूरी इमारत में कंपोजिट मारबल लगी है। ग्रीन एरिया ज्यादा रखा। सिंचाई के लिए रसोई और बॉथरूम के पानी का प्रयोग किया जाता है। इसका असर यह है कि छह साल पहले दो कमरों के मकान में कम संसाधनों पर बिजली-पानी की जितनी खपत होती थी, संसाधन बढ़ने के बावजूद दो मंजिला मकान में उससे कम खपत आज होती है। – ***एसके महेश्वरी,*** *सचिव, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र*